* फिरोज तुगलक के जनकल्याणकारी कार्य :-

- ↳ विभिन्न विभागों की स्थापना
- ↳ शिक्षा - साहित्य पर बल
- ↳ सार्वजनिक निर्माण कार्य
- ↳ पुरातत्व का संरक्षण

फिरोज की लोकप्रियता का कारण तो उसके जनकल्याणकारी कार्य रहे हैं। इन कार्यों के जरिए उसने विभिन्न वर्गों का समर्थन प्राप्त किया। इसके तहत उसने एक रोजगार कार्यालय की स्थापना की ताकि बेरोजगारों की पहचान कर उन्हें रोजगार उपलब्ध कराया जा सके। इसी तरह गरीब तथा असहाय लोगों की सहायता के लिए 'दीवान - ए - खैरात' विभाग की स्थापना की। यह विभाग निर्धन कन्याओं के विवाह के लिए भी आर्थिक सहायता देता था।

दीवान - ए - बंदगान

इसी तरह वृद्धों की देखरेख के लिए एक पेंशन विभाग → 'दीवान - ए - इस्तिहाक' की स्थापना की जो आधुनिक वृद्धावस्था पेंशन योजना के समान दिखाई पड़ती है। इसी तरह रोगियों की निः शुल्क चिकित्सा हेतु 'दारुलसफा' की स्थापना की जहाँ 3 निः शुल्क औषधि वितरीत होती थी। जैसा कि वर्तमान राजकीय चिकित्सालयों में होता था। ऐसा ही प्रयास तो प्राचीनकाल में अशोक ने किया था।

सार्वजनिक निर्माण कार्य:

फिरोज निर्माण कार्य के संबंध में एक विशिष्ट दृष्टिकोण रखता था। उसके अनुसार "अल्लाह ने मुझे जितने वरदान दिए हैं उनमें सार्वजनिक निर्माण करना भी एक वरदान है। इसलिए मैंने ये अनेक मस्जिदों, मदरसों एवं दरगाहों का निर्माण करवाया जिससे लोग उसमें अल्लाह को याद कर सके। और इसी क्रम में उसके निर्माण को बढ़ावा दे सके।" यही वजह है कि फिरोज ने अनेक भवनों का निर्माण करवाया। अशोक के स्तंभ को मेरठ तथा टोपरा से उखाड़कर दिल्ली में स्थापित करवाया जो फिरोज के पुरातात्विक विरासत के संरक्षण के दृष्टिकोण को दर्शाता है।

⇒ इसी तरह फिरोज ने ज्ञान-विज्ञान के प्रति रुचि दिखाई और समय जानने के लिए जलघड़ी का निर्माण करवाया।

शिक्षा साहित्य:-

फिरोज ने विद्वानों का सम्मान कर उन्हें संरक्षण दिया। शिक्षा हेतु मदरसों का निर्माण करवाया जहां विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को राज्य से समुचित सहायता मिलती थी।

⇒ फिरोज ने इतिहास लेखन की परंपरा को भी पोषित किया। इसने 'बर्नी' एवं 'अफीफ'

Scanned with CamScanner

को संरक्षण दिया जिन्होंने 'तारीख-ए-फिरोजशाही' ग्रंथ की रचना की तो बर्नी ने 'फतवा-ए-जहांदारी' ग्रंथ की रचना की। फिरोज स्वयं विद्वान था और उसने अपनी आत्मकथा 'फतुहात-ए-फिरोजशाही' नाम से लिखी। ऐसा करने वाला यह दिल्ली का पहला सुल्तान था।

⇒ फिरोज ने संस्कृत के ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराया जो 'दलायल-ए-फिरोजशाही' के नाम से जानी जाती है।

कुल मिलाकर उसका काल जनकल्याणकारी कार्यों, भवन निर्माण, शिक्षा साहित्य के विकास का काल था। उसके जनकल्याणकारी कार्य सल्तनत को एक नया स्वरूप प्रदान कर नये युग के आरंभ को सूचित करते हैं।

फिरोज जनकल्याणकारी कार्य

विभागों की स्थापना
- → दीवान-ए-खैरात
- → दीवान-ए-बंदगान
- → दीवान-ए-इस्तिहाक
- → दारुल सफा
- → रोजगार दफ्तर

सार्वजनिक निर्माण कार्य
- → विभिन्न नगरों का निर्माण
- → भवनों का निर्माण
- → विभिन्न नहरों का निर्माण
- → जलघड़ी का निर्माण

कृषि सम्बन्धी कार्य
- → कृषक ऋणमाफी
- → लगान-वास्तविक उपज, 1/3
- → उन्नत बीज एवं किस्म का प्रचार
- → फसल-चक्र एवं वाणिज्यिक कृषि को बढ़ावा

अन्य
- → अमानवीय दण्डों पर रोक
- → पुरातत्व संरक्षण

Scanned with CamScanner